Roll No. 567423

Z–300(A)

M. Ed. (First Semester)
EXAMINATION, Dec., 2015

(Elective Paper)

Paper Fourth

STRENGTHENING LANGUAGE
PROFICIENCY (HINDI)

Time : Three Hours] [*Maximum Marks : 100*

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

1. विद्यार्थी के रूप में विद्यालय से सम्बन्धित अपने अतिरिक्त अनुभव का इस प्रकार वर्णन कीजिए जिससे अनुभव सजीव (दृश्यमान) हो जाए।

अथवा

निम्नलिखित पंक्तियों का सार लिखिए तथा पंक्तियों के भाव को मद्देनजर रखते हुए कहानी लिखिए :

जब मैं आया था। तब मेरी कोई जाति नहीं थी,
और जब मैं जा रहा हूँ तब भी मेरी कोई जाति नहीं है—
आकाश को ऐसा ही खुला रहने दो,
धरती को भी मत बाँधो,
तुमने जो बीच-बीच में दीवालें खड़ी कर ली हैं,
उन्हें गिरा दो क्योंकि वह तुम्हीं ने बनाई है।

2. विद्यार्थियों में लेखन शैली का विकास किस प्रकार किया जा सकता है ? विस्तारपूर्वक समझाइए।

अथवा

निम्नलिखित कहानी को संवाद के रूप में परिवर्तित कीजिए–

वो बात, वो शान ही अलग होती थी। हमारे समय में कार्ड भेजने तक को गलत मानते थे। कहीं भी हो, दीपावली पर तो घर पहुँचना ही है। सबके पैर छुओ। आशीर्वाद कमाओ। चहचहाहट। धमाचौकड़ी। हाँ, आजकल तो फेसबुक पर ही फॉर्मलिटी। अरे, कुछ भी मेहनत नहीं, बस व्हाट्सएप पर मैसेज, वह भी फॉरवर्ड ..... क्या निभाना जानेगी यह पीढी ..... और तो और अब तो सुप्रीम कोर्ट से पूछना पड़ता है कि कितने बजे तक पटाखे फोड़े ..... चाचू, मैं गरम-गरम समोसे लाई हूँ। सारी चिंता छोड़िए में खा लीजिए पहले ..... प्रीति ने कहा। अरे बेटी, खा लेंगे। अब खाने में भी वो बात कहाँ ? सबसे बड़े दादाजी ने यकायक चुप्पी तोड़ी।

बात तो हम लोगों में भी वो कहाँ रही ? मेरे पिता पूरे ट्रक भर पटाखे खरीदते थे। हम छह भाई। हमारे बच्चे। पूरा अखबार बिछाया जाता, एक-एक बच्चे के सामने। उस पर ढेरों पटाखे फुलझड़ियाँ। हम हर बच्चे के साथ, उसको पटाखे चलाने में मदद करते। हम भाइयों में से कोई नए कपड़े लाता, तो सभी बच्चों के लिए लाता। सभी बहुएं एक साथ मिलकर सफाई करतीं। सजावट। खाना बनातीं। माहौल बनाती। सब कुछ सबका होता।

इसीलिए, तब हम भी अलग थे। अच्छे थे। और आज हम भी अलग हैं। नौजवान भी अलग है। अच्छे ही हैं। समय आज, अभी

ही सर्वश्रेष्ठ है। तब, तब का था। आज, अब का है। सब प्रसन्न हो गए। खाने का आनन्द सौ गुना बढ़ गया।

3. विद्यालय में पत्रिका सम्पादक के रूप में आप विद्यालयीन पत्रिका का सम्पादन किस प्रकार करेंगे ?

अथवा

किसी स्थानीय समस्या द्वारा अनुसंधान लेख के विभिन्न चरणों को समझाइए।

4. अनुसंधान में संदर्भ ग्रन्थों (पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, इन्टरनेट से प्राप्त सामग्री इत्यादि) को किस प्रकार लिखा जाता है ?

अथवा

अनुसंधान में संदर्भ ग्रन्थों का क्या महत्व है ?

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** विषयों की समीक्षा कीजिए :

(अ) मन के हारे हार है मन के जीते जीत।

(ब) एम. एड. के दो वर्षीय पाठ्यक्रम की सार्थकता

(स) पर उपदेश कुशल बहुतेरे

(द) डिजीटल भारत

अथवा

यदि यह मान लिया जाए कि आर्थिक निश्चिन्तता कला के उत्कर्ष में बाधक हैं तो उसके परिणामस्वरूप यह भी मानना पड़ेगा कि आर्थिक चिन्ता से कला का जन्म या विकास होता है। यह ठीक है कि इतिहास या वर्तमान युग से हम दोनों प्रकार के उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं। एक ओर यदि ऐसे कलाकार मिल सकते हैं जिनकी कला का विकास अभावों के कारण हुआ है तो दूसरी ओर अनेक उदाहरण ऐसे भी हैं जहाँ जीविका की चिन्ता ने कला का गला ही घोंट दिया है।

मेरी दृष्टि में यह प्रश्न आर्थिक नहीं मनोवैज्ञानिक है, अर्थात् अभाव या कुंठा का ही सम्बन्ध कला के साथ माना जा सकता है। आर्थिक स्थिति का सीधा सम्बन्ध कला-सर्जना के साथ नहीं है, वह मन के अभावों का परिवेश या निमित्त कारण अवश्य बन सकती है, परन्तु आर्थिक अभाव और मन के अभाव दोनों पर्याय नहीं माने जा सकते हैं। अर्थ के सद्भाव में भी, अव्यवहार में हम देखते हैं कि मन के अभावों का अंत नहीं होता।

वास्तव में मैं अर्थ के साथ कला का सम्बन्ध नहीं जोड़ना चाहता, न कारण रूप में और न फल रूप में। कला का सम्बन्ध तो मन के साथ ही है और आर्थिक स्थिति कला को उसी हद तक प्रभावित कर सकती है और यह प्रभाव भी निश्चय ही अप्रत्यक्ष होता है, प्रत्यक्ष नहीं।

अब प्रश्न यह उठता है कि मन के अभावों का कला के साथ क्या सम्बन्ध है ? इसका एक उत्तर तो यह है कि अभाव में चेतना अत्यन्त संवेदनशील हो जाती है और चेतना की संवेदनशीलता निश्चय ही कला का उत्कर्ष करती है। कला को मैं आत्माभिव्यक्ति मानता हूँ और अभिव्यक्ति की उत्कंठा या आतुरता जितनी अभाव में होती है उतनी सद्भाव या संतोष में नहीं होती। अभाव पुकारता है संतोष मौन रहता है, या यों कहें कि अभाव मचलता है संतोष शान्त रहता है। अभावों से अस्त–अस्त चित्तवृत्ति जब सर्जनात्मक कल्पना के योग से सक्रिय होकर समाहित के लिए अग्र हो उठती है तब कला का जन्म होता है। कलाकार के मन का अभाव जितना ही गहरा होगा, उतने ही वेग से उसकी सर्जक प्रतिभा हो सक्रिय होना पड़ेगा, और इस प्रक्रिया की परिणति जिस समाहित

में होगी वह भी उतनी ही प्रबल होगी। इसी दृष्टि के कवियों और आलोचकों ने करुणा या दुःख को कला का साधक माना है। अपने जीवन के अभावों की रस में सफल परिणति करने पर ही तो भवभूति सहसा कह उठे थे—"एको रसः करुण एव"।

उपर्युक्त अवतरण को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) प्रस्तुत अवतरण का उयुक्त शीर्षक दीजिए।

(ख) प्रस्तुत अवतरण का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

(ग) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

Roll No. 7439057003

AD–272

M. Ed. (First Semester)
EXAMINATION, Dec., 2016

(Elective Paper)

Paper Fourth

STRENGTHENING LANGUAGE
PROFICIENCY (HINDI)

Time : Three Hours

Maximum Marks : 100

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

1. निम्नलिखित पंक्तियों का सार लिखिये तथा पंक्तियों के भाव को मद्देनजर रखते हुए कहानी लिखिये : 20

श्रद्धा ज्ञान देती है,
नम्रता मान देती है और,
योग्यता स्थान देती है।
पर श्रद्धा, नम्रता एवं योग्यता तीनों मिल जायें तो व्यक्ति को हर जगह सम्मान की प्राप्ति होती है।

अथवा

विद्यार्थी के रूप में महाविद्यालय से सम्बन्धित अपने अनुभवों का वर्णन इस प्रकार कीजिये जो सभी विद्यार्थियों के लिये प्रेरणादायक हो।

P. T. O.

2. निम्नलिखित कहानी को संवाद के रूप में परिवर्तित कीजिये। इस कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है ? 20

अंग्रेजी के प्रसिद्ध लेखक जॉर्ज बर्नार्ड शॉ का आरम्भिक जीवन बेहद संघर्षपूर्ण था। लेकिन तमाम विपरीत परिस्थितियों में भी उन्होंने हार नहीं मानी, और धीरे-धीरे सफलता की बुलंदियाँ छूते गये। एक दिन उन्हें एक कॉलेज के कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। बर्नार्ड शॉ ने सहजता से आमंत्रण स्वीकार कर लिया और कार्यक्रम के दिन कॉलेज पहुँच गए। उन्हें देखकर कॉलेज के विद्यार्थियों के उत्साह का कोई ठिकाना नहीं था। सभी उनकी एक झलक पाने को लालायित हो उठे।

कार्यक्रम समाप्त हुआ तो उनके ऑटोग्राफ लेने वालों की एक अच्छी-खासी भीड़ वहाँ जमा थी। एक नौजवान ने अपनी ऑटोग्राफ बुक उन्हें देते हुए कहा, "सर मुझे साहित्य से बहुत लगाव है और मैंने आपकी पुस्तकें पढ़ी हैं। मैं अब तक अपनी कोई पहचान नहीं बना पाया हूँ, लेकिन बनाना अवश्य चाहता हूँ। इसके लिये आप कोई संदेश देकर अपने हस्ताक्षर कर दें, तो बहुत मेहरबानी होगी।" बर्नार्ड शॉ नौजवान की इस बात से धीमे से मुस्कराए, फिर उसके हाथ से ऑटोग्राफ बुक लेकर एक संदेश लिखा और अपने हस्ताक्षर भी कर दिये।

नौजवान ने ऑटोग्राफ बुक खोलकर देखी तो संदेश पर उसकी नजर गई। लिखा था—'अपना समय दूसरों के ऑटोग्राफ इकट्ठा करने में नष्ट न करें, बल्कि खुद को इस योग्य बनाइए कि दूसरे लोग आपके ऑटोग्राफ प्राप्त करने के लिये लालायित रहें। यह संदेश पढ़कर नौजवान ने उनका अभिवादन किया और बोला सर मैं आपके इस संदेश को जीवन भर याद रखूँगा और अपनी एक अलग पहचान बनाकर दिखाऊँगा। बर्नार्ड शॉ ने नवयुवक की पीठ थपथपाई और आगे चल पड़े।

अथवा

निम्नलिखित पंक्तियों की समीक्षा कीजिये तथा रेखांकित पंक्तियों को ध्यान में रखते हुए कहानी लिखिये :

मुश्किल नहीं है कुछ दुनिया में,
तू जरा हिम्मत तो कर !
ख्वाब बदलेंगे हकीकत में
तू जरा कोशिश तो कर।
आँधियाँ सदा चलती नहीं,
मुश्किलें सदा रहती नहीं,
मिलेंगी तुझे मंजिल तेरी,
तू जरा कोशिश तो कर।
राह संघर्ष की जो चलता है
वो ही संसार को बदलता है
जिसने रातों से जंग जीती है।
सूर्य बनकर वही निकलता है।

3. किसी स्थानीय समस्या द्वारा अनुसंधान लेख के विभिन्न चरणों को समझाइये। 20

अथवा

आप एक लेखक के रूप में किसी लेख की रूपरेखा किस प्रकार तैयार करेंगे ?

4. अनुसन्धान के संदर्भ ग्रन्थों का क्या महत्त्व है ? 20

अथवा

हिन्दी विषय से सम्बन्धित अनुसंधान करते समय संदर्भ ग्रन्थों की क्या उपयोगिता है तथा संदर्भ ग्रन्थों को किस प्रकार लिखा जाता है ?

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** विषयों की समीक्षा कीजिये : 20

(क) काले धन पर सरकार की रणनीति।

(ख) सफलता का मूलमंत्र—आत्मविश्वास।

(ग) बी. एड. के दो वर्षीय पाठ्यक्रम की सार्थकता।

अथवा

भारतीय किसान भाषा और भाव का धनी है। उसके गीतों में उसके सुख-दुःख की अनुमति प्रकट होती है। उसकी पैनी बुद्धि गाँव की कहावतों में जगमगाती है। मेल-जोल किसान के जीवन को बाँधने वाली रस्सी है, उसमें मिल-जुलकर जीवन चलाने का अद्‌भुत गुण है। खेती के गाढ़े समय में, वह खुले मन से एक दूसरे का हाथ बँटाता है। जब वह खेती में उतरता है खून-पसीना एक कर देता है। भारतीय किसान कथा-वार्ता का भी प्रेमी रहा है। उसे अपने पूर्वजों के चरित्रों में रुचि है। आँखे उसकी काले अक्षर नहीं देखतीं, पर कानों और कंठों के द्वारा वह अपरिचित ज्ञान राशि की रक्षा करता आया है। लेकिन आज किसान की आत्मनिर्भरता धीरे-धीरे समाप्त होते जा रही है। एक-एक करके बाहरी कल-काँटे उसके जीवन पर छापा मार रहे हैं और वह उनके भ्रमजाल में पड़कर अपनी आर्थिक और बौद्धिक स्वतंत्रता खो रहा है। लगता है किसान न घर का रहेगा, न घाट का।

आज तो उल्टी गंगा बहने लगी है। तिनकों का वस्त्र पहनने वाली गाँव की देवी लाल ईंट के मोह में फँस रही है। उसमें बिजली भरने की आवश्यकता है। हलधर मनोवृत्ति के प्रचार से शहर और गाँव में किसान के जीवन के प्रति नई रुचि उत्पन्न होगी और संकल्पवान शक्तियों में नये उत्साह का उदय होगा।

उपर्युक्त अवतरण को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये :

(क) भारतीय किसानों की विशेषताओं का वर्णन कीजिये।

(ख) किसानों के जीवन में हुए परिवर्तन के सम्बन्ध में लेखक कौन-सी शंका प्रकट कर रहा है ?

(ग) लेखक किस सावधानी की ओर संकेत कर रहा है ?

(घ) निरक्षर होते हुए भी किसान अपरिचित ज्ञान राशि की रक्षा कैसे करता है ?

(ङ) भारतीय किसान भाषा और भाव का धनी है। स्पष्ट कीजिये।